SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

संघर्षपूर्ण कहानी : महान ओलंपियन हॉकी खिलाड़ी सुमित कुमार वाल्मीकि

डॉ. रविन्द्र कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय, भट्टूकलां, फतेहाबाद, हरियाणा

प्रस्तावना :

खेल हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी है। खेल कई नियमों एव रिवाजो द्वारा संचालित होने वाली एक प्रतियोगी गतिविधि है। यह हमारे शरीर, मस्तिष्क को स्वस्थ रखता है। शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए खेल सबसे अच्छा तरीका है। खेल के खेलने से हमारा शारीरिक स्वास्थ्य सुधरता है और हमें ऊर्जा मिलती है। यह हमारे मानसिक तनाव को काम करता है और हमें खुश रखता है। खेल खिलाड़ियों के लिए राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर बहुत अच्छा अवसर प्रदान करता है। कुछ देशों में कुछ अवसरों, कार्यक्रमों और त्योहार के आयोजन पर खेल गतिविधियां करवाई जाती है। खेल व्यक्ति के जीवन में, विशेष रूप से विद्यार्थियों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खेलों में निमित्त रूप से शामिल होने वाले व्यक्ति शारीरिक व मानसिक रूप से तंदुरुस्त मिलते हैं। वह अपना कार्य बिना थकावट के बड़ी आसानी से कर पाने में सक्षम होते हैं। खेल व्यक्ति को तनाव चिंता नशा आदि से मुक्ति प्रदान करता है। यह खिलाड़ियों के लिए भविष्य और पेशेवर जीवन का क्षेत्र प्रधान करता है। यह खिलाड़ियों को उनके नाम प्रसिद्ध और धन देने की क्षमता रखता है। आज मे जिस खिलाड़ी के विषय में आपको बताना चाहता हूं वह खिलाड़ी अपने हॉकी के क्षेत्र में एक महान मुकाम हासिल कर चुका है। इस खिलाड़ी का नाम है सुमित कुमार वाल्मीकि है। यह एक मिडफील्डर खिलाड़ी है जो बड़ी ईमानदारी, कठिन परिश्रम से देश को पदक दिलाने के लिए जी जान लग रहा है। इन्होंने अपने जीवन में संघर्ष के बल पर अपने आप को साबित किया है और आज हॉकी के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है। यदि हम कुछ पलों के लिए इतिहास की ओर देखें या किसी सफल व्यक्ति के जीवन पर प्रकाश डाले तो हम देखते हैं कि नाम प्रसिद्धि और धन आसानी से प्राप्त नहीं होते हैं। इसके लिए बड़ी लगन, नियमितता, व्यायाम, धैर्य, अनुशासन, कठिन परिश्रम शामिल होता है।

मुख्य शब्द- ओलंपियन, हॉकी खिलाड़ी, एशियाई खेल, निष्ठावान, आज्ञाकारी, मेहनती ।

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

हॉकी का इतिहास:

हॉकी एक प्राचीन और लोकप्रिय खेल है जिसे विश्वभर में बड़े पैमाने पर खेला जाता है। यह खेल मुख्य रूप से टीम-खेल के रूप में खेला जाता है, जिसमें दो टीमें होती हैं और प्रत्येक टीम का उद्देश्य गेंद को विरोधी गोल में डालना होता है। हालांकि हॉकी के वर्तमान रूप को आधुनिक ओलंपिक खेल के रूप में जाना जाता है, इसके इतिहास की जड़ें बहुत पुरानी हैं और यह खेल विभिन्न रूपों में प्राचीन काल से अस्तित्व में रहा है। उदाहरण के तौर पर, प्राचीन यूनान में "हिप्पोकास्टिक" नामक एक खेल था जिसमें एक गेंद और लकड़ी की छड़ी का उपयोग किया जाता था। इसके अलावा, रोम में "Harpastum" नामक खेल खेला जाता था, जिसमें गेंद को कब्जे में रखने के लिए खिलाड़ियों को अपने विरोधियों के खिलाफ शारीरिक मुकाबला करना पड़ता था। हॉकी भारत का राष्ट्रीय खेल है। आज तक हॉकी के इतिहास में भारत ओलंपिक में सबसे अधिक स्वर्ण पदक प्राप्त किए हैं। हॉकी एक बेहतरीन खेल है जिसमें दो टीमें लकड़ी या कठोर धातु या फाइबर से बनी स्टिक की सहायता से खेलती है और इसमें रबर व प्लास्टिक की गेंद के साथ खेला जाता है। दोनों टीमें विरोधी टीम में गोल डालने का प्रयास करती है। इसमें लकड़ी व नेट से बने गोल पोस्ट होते है जो टीम ज्यादा गोल करती है उसको विजय घोषित किया जाता है।

हॉकी खेल की शुरुआत मिस्र देश से हुई है इसके बाद यह बहुत से देश में खेला जाने लगा। भारत में इसका आरंभ 200 वर्षों से पहले हुआ था। इसमें 11 - 11 खिलाड़ी एक टीम में होते हैं और सभी खिलाड़ी बाल को गोल पोस्ट में गोल करने का प्रयास करते हैं। जो टीम अधिक गोल कर देती है वह टीम विजय घोषित होती है। 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में भारत में इस खेल के विस्तार मुख्य रूप से

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

ब्रिटिश सेना को जाता है। सैनिक छावनी वाले सभी नगर जैसे लाहौर, जालंधर, लखनऊ, झांसी, जबलपुर भारतीय हॉकी के गढ़ थे। भारत में यह सबसे पहले कोलकाता में खेला गया था। भारत ओलंपिक हॉकी में पदक जीतने में पहला स्थान है। 1928 में भारतीय की टीम अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पहली गैर यूरोपीय सदस्य टीम बनी। 1928 में भारत ने पहली बार एम्सडन नीदरलैंड ओलंपिक में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1956 तक भारत ने लगातार 6 बार स्वर्ण पदक जीता है। विश्व हॉकी में भारतीय हॉकी ने अपनी अनूठी छाप छोड़ी है। भारत ने ओलंपिक में आठ स्वर्ण एक रजत पदक और तीन कांस्य पदक शामिल है। 1980 में भारत ने अंतिम पदक प्राप्त किया था। बहुत लंबे अंतराल के बाद 2020 में टोक्यो ओलंपिक में भारत ने कांस्य पदक प्राप्त किया और हॉकी क्षेत्र में लंबे समय से सूखा पड़ा हुआ था उसको समाप्त किया और फिर से विश्व हॉकी स्तर पर अपना दावा पेश किया। आज हम जिस हॉकी खिलाड़ी का जिक्र कर रहे हैं उन्होंने 2020 टोक्यो जापान ओलंपिक में भारत को कांस्य पदक दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सुमित वाल्मीकि ने 2024 ओलंपिक खेल जो पेरिस में आयोजित हुए उसमें भी कांस्य पदक प्राप्त किया है। लगातार 2020 और 20 24 के ओलंपिक में कास्य पदक प्राप्त किया है।

हॉकी के खेल की उत्पत्ति प्राचीन काल में हुई थी, हालांकि इसके प्रारंभिक रूपों का दस्तावेजीकरण पूरी तरह से नहीं हो सका है। यह माना जाता है कि हॉकी जैसा खेल प्राचीन सभ्यताओं में खेला जाता था, जैसे कि मिस्र, यूनान, और रोम में। विशेष रूप से, यूनानियों और रोमनों के खेलों में स्टिक और गेंद का उपयोग देखने को मिलता है। मध्यकालीन यूरोप में हॉकी के खेल के बहुत से रूप सामने आए। मध्यकालीन यूरोप में हॉकी के कई प्रकार के खेल विकसित हुए। इंग्लैंड में, 18वीं शताब्दी के दौरान हॉकी का प्रारंभिक रूप तेजी से लोकप्रिय हुआ। इसे विभिन्न नामों से जाना जाता था, जैसे कि "shinny" और "bandy"। यह खेल गांवों में खेले जाते थे, जिसमें प्रत्येक गांव के खिलाड़ी भाग लेते थे और गेंद को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाने की कोशिश करते थे। इस समय, खेल में एक तरह की सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका भी थी, क्योंकि यह खेल ग्रामीण समुदायों में मनोरंजन का प्रमुख स्रोत था। हॉकी के खेल को एक संगठित रूप में लाने का कार्य 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ, जब इंग्लैंड में स्कूलों और कॉलेजों में इसे शारीरिक शिक्षा के रूप में शामिल किया गया। इंग्लैंड में 18वीं शताब्दी के अंत में हॉकी के खेल का आधुनिक रूप विकसित हुआ। 19वीं शताबदी के अंत में इंग्लैंड में आधुनिक हॉकी का रूप विकसित हुआ। 1871 में "हॉकी क्लब ऑफ लंदन" की स्थापना हुई, जिसने हॉकी के खेल के लिए बुनियादी नियम बनाए। इसके साथ ही, 1886 में "इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ हॉकी" (FIH) की स्थापना हुई, जो आज भी अंतरराष्ट्रीय हॉकी को नियंत्रित करने वाला मुख्य संगठन है। इस समय से हॉकी का खेल स्कूलों और विश्वविद्यालयों में लोकप्रिय होने लगा, और इसे एक संगठित और संरचित खेल के रूप में स्थापित किया गया। इस दौरान हॉकी को पहली बार 1908 में लंदन ओलंपिक में शामिल किया गया। यह हॉकी के खेल

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था, क्योंकि इसके बाद हॉकी को ओलंपिक खेलों का हिस्सा बना दिया गया। और तब से यह खेल ओलंपिक का हिस्सा बना हुआ है।

भारत में हॉकी का इतिहास अत्यंत गौरवपूर्ण और समृद्ध है। भारतीय हॉकी ने अपनी सफलता के झंडे पूरी दुनिया में गाड़े, विशेषकर 20वीं शताब्दी के मध्य में। भारत ने 1928 में एम्स्टर्डम ओलंपिक में पहला गोल्ड मेडल जीता। यह भारतीय हॉकी का स्वर्णिम युग था, और इसके बाद भारत ने 1932, 1936, 1948, 1952, 1956 और 1964 के ओलंपिक खेलों में लगातार स्वर्ण पदक जीते। भारत ने हॉकी में अपनी अग्रणी स्थिति बनाए रखने में बड़ी भूमिका निभाई है, और इस दौरान भारत के महान खिलाड़ी जैसे ध्यान चंद ने हॉकी को नए आयाम दिए। ध्यान चंद, जिन्हें "हॉकी का जादूगर" कहा जाता है, ने अपनी शानदार गेंद नियंत्रण और गोल करने की कला से पूरे विश्व को हैरान कर दिया। उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता, और उनका नाम भारतीय हॉकी के स्वर्ण युग का पर्याय बन गया है। भारत के हॉकी के महान खिलाड़ी जैसे **ध्यान चंद**, जिन्हें "हॉकी के जादूगर" के नाम से जाना जाता है, ने भारतीय हॉकी को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान दी। ध्यान चंद का योगदान हॉकी के खेल में अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा, और उनकी तकनीकी क्षमता और नेतृत्व ने भारतीय हॉकी को कई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सफलता दिलाई। आज हॉकी विश्वभर में एक महत्वपूर्ण खेल है, और कई देशों में इसे खेलों के प्रमुख रूप में खेला जाता है। **ऑस्ट्रेलिया**, **नीदरलैंड्स**, **जर्मनी**, **पाकिस्तान**, और **स्पेन** जैसे देश हॉकी के खेल में प्रमुख रूप से शामिल हैं और लगातार अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उच्च स्थान प्राप्त करते हैं। हॉकी के खेल को अब 50 से अधिक देशों में खेला जाता है, और यह खेल विभिन्न आयु वर्गों और लिंगों के लिए उपलब्ध है।

हॉकी का इतिहास एक लंबा और विविधतापूर्ण इतिहास है, जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक फैलता है। यह खेल न केवल एक शारीरिक चुनौती है, बल्कि एक मानसिक खेल भी है जिसमें टीमवर्क, रणनीति, और व्यक्तिगत कौशल की आवश्यकता होती है। भारत, जिसने इस खेल में अत्यधिक सफलता प्राप्त की है, को हॉकी का एक प्रमुख केंद्र माना जाता है, और आने वाले वर्षों में यह खेल और भी अधिक लोकप्रियता प्राप्त करेगा।

भारत के कुछ मुख्य खिलाड़ी

- ध्यानचंद भारतीय फील्ड हॉकी के भूतपूर्व खिलाड़ी एवं कप्तान रहे हैं। विश्व हॉकी के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में उनकी गिनती होती है। वह तीन बार ओलंपिक में स्वर्ण पद जीतने वाली टीम के सदस्य रहे हैं। उनके जन्म दिवस 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में भारत में मनाया जाता है।

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

- बलबीर सिंह सीनियर भारत के बेहतरीन खिलाड़ी रहे हैं। इन्होंने 1948, 1952, 1956 के ओलंपिक खेलों में भाग लिया है। 1952 के ओलंपिक खेलों में इन्होंने सबसे अधिक पांच गोल दागे थे।

- मोहम्मद शाहिद भारत के एक बेहतरीन हॉकी खिलाड़ी रहे हैं। इन्होंने 1980 के ओलंपिक खेलों में गोल्ड मेडल प्राप्त किया है यह एक बेहतरीन खिलाड़ी थे।

- अजीत पाल सिंह ने 1975 के वर्ल्ड कप में बेहतरीन प्रदर्शन किया था। 1975 के वर्ल्ड कप में भारत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

- लेस्ली लेस्ली ने चार बार ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। कमाल के हॉकी के खिलाड़ी रहे हैं।

- धनराज पिल्ले भारत के बहुत ही अच्छे खिलाड़ी रहे हैं। जिन्होंने तीन ओलंपिक तीन वर्ल्ड कप और चार एशियाई खेलों में भाग लिया है। इनको 1995 में अर्जुन पुरस्कार और 1999 में राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

- भारत के मुख्य प्रमुख खिलाड़ी हैं जिन्होंने हॉकी के जगत में एक अमिट छाप छोडी है अशोक कुमार, अजीत पाल सिंह, केडी सिंह, शंकर लक्ष्मण, दिलीप टर्की, रूप सिंह, प्रगट सिंह संदीप सिंह, सरदार सिंह, देवेंद्र वाल्मीकि, युवराज वाल्मीकि, अली शौकत, हरमनप्रीत सिंह, मनप्रीत सिंह, जुगराज सिंह, पीआर श्रीजेश, वीरेंद्र रसकीना ।

समस्या कथन:

प्रस्तावित शोध समस्या की नवीनता एवं महत्व को ध्यान में रखते हुए खिलाड़ियों एवं नए शोधार्थियों को ऐसे महान खिलाड़ी के व्यक्तिगत जीवन की जानकारी होना अति आवश्यक है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने निमांकित विषय को अपने अध्ययन का क्षेत्र बनाया है - "संघर्ष पूर्ण कहानी ओलंपियन, महान, हॉकी खिलाड़ी सुमित कुमार वाल्मीकि" ।

शोध का महत्व:

1 जूनियर हॉकी खिलाड़ियों शारीरिक शिक्षकों को प्रेरित करना।

2 प्रस्तुत अध्ययन में महान खिलाड़ी सुमित कुमार की उपलब्धियां के बारे में जानना।

3 प्रस्तुत अध्ययन में उनकी पारिवारिक परिस्थितियों के बारे में जानना।

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

4 प्रस्तुत अध्ययन में महान खिलाड़ी सुमित कुमार के संघर्षपूर्ण जीवन पर प्रकाश डालना है।

शोध विधि:

मेरे शोध का विषय है "संघर्ष पूर्ण कहानी ओलंपियन, महान, हॉकी खिलाड़ी सुमित कुमार वाल्मीकि" ।

एक सूक्ष्म सक्रिय प्रकृति का तथा मुख्य रूप से प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। शोधकर्ता द्वारा इस शोध में आंकड़ों का संकलन प्राथमिक व द्वितीय दोनों प्रकार के स्रोतों से किया है। जिसमें शोधकर्ता ने व्यक्तिगत साक्षात्कार व परिवार के सदस्यों द्वारा आंकड़ों को एकत्रित किया है। शोध को व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक पक्षो का विवेचन करने के लिए द्वितीय स्रोतों से सूचनाओं एकत्रित की गई है। इन द्वितीय स्रोतों में शोधार्थी द्वारा समाचार पत्रों की कटिंग, फोटो, उनके राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त पुरस्कारों की सूचनाओं को शामिल किया गया है।

जीवन परिचय:

सुमित कुमार वाल्मीकि का जन्म 20 दिसंबर 1996 को गांव कुराड़ सोनीपत जिले में हुआ। सुमित का जन्म एक भूमिहीन दलित वाल्मीकि परिवार में हुआ। उनके माता-पिता प्रताप सिंह और दर्शन देवी ने अपने तीन बेटों को पालन पोषण करने के लिए तैयारी मजदूरी करते थे। जिसमें अमित कुमार और जय सिंह दो बेटे हैं जो सुमित से बड़े हैं। सुमित ने अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने गांव के क सीनियर सेकेंडरी स्कूल में पूरी की। स्कूल की हॉकी अकादमी में सुमित ने 8 साल की उम्र में दाखिला लिया। कोच ने उन्हें मुफ्त हॉकी स्टीक व जूते दिए सुमित कुमार का जीवन बहुत ही संघर्षपूर्ण रहा है। एक समय ऐसा भी रहा है कि जब उनके खाने के लिए कुछ भी नहीं होता था। भूखे पेट ही सोना पड़ता था और फिर मैदान पर अभ्यास के लिए जाना होता था। मां को याद कर कर सुमित कुमार जी भावुक हो जाते हैं। मां से उनका लगाव बहुत अधिक था। मां की बाली से उन्होंने एक लॉकेट बनवाया जिसमें अपनी मां की की फोटो लगी हुई थी को पहन कर 2020 टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीता है। मां को हमेशा सुमित कुमार जी मिस करते हैं। सुमित कुमार

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

के गुरु एन.के. गौतम जी हैं। उन्होंने कहा कि जीवन का पथ जहां से शुरू होता है वो दिखाने वाला गुरु ही होता है।

सुमित के बड़े भाई अमित बताते हैं कि उनका छोटा भाई सोनीपत पुरुष हॉकी का पहला ओलंपिक बना है। सुमित ने अभावग्रस्त जीवन यापन किया है। लेकिन भाव को कभी अपने कमजोरी नहीं बनने दिया समय-समय पर सुमित ने होटल में काम कर परिवार को आर्थिक सहारा देने का प्रयास किया है। परिवार पर आर्थिक बोझ ना पड़े इसके लिए वह हॉस्टल से अपने घर पर बहुत कम आता था। बड़े भाई जय सिंह की शादी में भी अपने खेल प्रतियोगिताएं के कारण शामिल नहीं हो सका था। सुमित कुमार ने बड़े ही संघर्षों के साथ अपने आप को खेल जगत में साबित किया है।

अमर उजाला के एक इंटरव्यू में सुमित वाल्मीकि ने कहा है कि हॉकी ने ही मुझे गरीबी से बाहर निकाला है। मैं यही चाहता हूं कि मैंने जितना संघर्ष किया है बाकी खिलाड़ियों को न करना पड़े भारत सरकार व हरियाणा सरकार से अनुरोध है कि ज्यादा से ज्यादा एस्टो टर्फ ग्राउंड बनाएं ताकि सभी खिलाड़ी एस्ट्रो ट्रफ पर खेल सके ताकि मेडल लाने की सूची में हमारा नाम सबसे ऊपर हो। क्योंकि सुविधाओं के अभाव में कोई भी खिलाड़ी नहीं रहना चाहिए। भारतीय हॉकी टीम ने जब ओलंपिक 2024 में कांस्य पदक जीता तो सुमित कुमार के भाई जय वाल्मीकि ने कहा कि यह कांस्य पदक हमारे लिए सोने जितना ही मूल्यवान है टीम ने वास्तव में ही बेहतरीन प्रदर्शन किया है।

इटीसी भारत /स्पोर्ट्स के अनुसार सुमित कुमार वाल्मीकि भारतीय हॉकी टीम के सबसे अमीर खिलाड़ियों में तीसरे स्थान पर आते हैं। जिन्होंने भारत के लिए हॉकी खेल में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वह अपनी गति, चतुराई और स्कोरिंग स्किल्स के लिए पहचाने जाने वाले खिलाड़ी हैं। उन्हे अक्सर फैंस से सामान और प्रशंसा मिलती है। सुमित वाल्मीकि की अनुमानित संपत्ति 5 मिलियन डॉलर है। जो भारतीय करेंसी के अनुसार 42 करोड़ के लगभग है।

© Shodh Patra

पुरस्कार व उपलब्धियां:

- 2016 वर्ल्ड कप लखनऊ में आयोजित हुआ स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- 2017 पहली बार सीनियर टीम में चयन हुआ और और सुल्तान अजलन शाह कप में भागीदारी की।
- 2016-17 में वर्ल्ड लीग में कांस्य पदक प्राप्त किया।
- 2017 एशिया कप जो ढाका बांग्लादेश में आयोजित हुआ स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- 2018 एशियाई चैंपियनशिप ट्रॉफी में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- 2018 राष्ट्रमंडल खेल गोल्ड कोस्ट ऑस्ट्रेलिया में चौथा स्थान प्राप्त किया।
- 2018 वर्ल्ड कप जो भुवनेश्वर उड़ीसा में आयोजित हुआ में छठा स्थान प्राप्त किया।
- 2020 टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक प्राप्त किया।
- 2021 एशिया चैंपियनशिप ट्रॉफी ढाका में कांस्य पदक प्राप्त किया।
- 2023 एशियाई चैंपियनशिप ट्रॉफी चेन्नई में आयोजित हुई में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- 2022 19वी एशियाई खेल हंगजोऊ चीन मे आयोजित हुये उनमें स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- 2024 ओलंपिक खेल जो पेरिस में आयोजित हुए उनमे कास्य पदक प्राप्त किया।

निष्कर्ष:

हॉकी का इतिहास अत्यंत समृद्ध और विकासशील है। यह खेल विभिन्न संस्कृतियों और कालखंडों में उत्पन्न हुआ और एक वैश्विक खेल के रूप में स्थापित हुआ। भारतीय हॉकी ने इस खेल को उच्च मानक पर पहुंचाया और कई वर्षों तक वैश्विक स्तर पर जीत की परंपरा स्थापित की। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में भारतीय हॉकी को चुनौतियों का सामना करना पड़ा, फिर भी हाल के वर्षों में इसमें सुधार की गति दिखाई दी है। अब यह समय है कि भारत अपनी हॉकी प्रणाली को और अधिक सशक्त बनाकर, दुनिया में अपनी पूर्व स्थिति को पुनः प्राप्त करें। मैं चाहता हूं कि महान हॉकी खिलाड़ी सुमित कुमार की पारिवारिक पृष्ठभूमि व्यक्तिगत जीवन और उनकी उपलब्धियां को सभी जान सके और उनके जीवन में से जूनियर खिलाड़ियों को प्रेरणा मिल सके और हॉकी के क्षेत्र में कठिन परिश्रम करके देश के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक ला सके और अपने माता-पिता में देश का नाम ऊंचा कर सके।

संदर्भ ग्रंथ :

- मोनिका भारती 2016, "दीपा करमाकर भारतीय जिमनास्टिक में प्रेरणा स्रोत", प्रोसीडिंग नेशनल कॉन्फ्रेंस फिजिकल एजुकेशन, ISBN-978-81-927686-5-6 पृ 383
- रेणु देवी 2016 "वलीमा रुडोल्फ अपंगता से ओलंपिक गोल्ड मेडल "नेशनल कॉन्फ्रेंस फिजिकल एजुकेशन, ISBN-978-81-927686-5-6 पृ 390-393

- रविंद्र कुमार 2019 "ओलंपियन अर्जुन अवार्ड महान मुक्केबाज एक व्यक्तिगत अध्ययन "इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन सोशल साइंस vol.9 issue 2 FEB 2019 ISSN 2249-2496
- https:/en.wikipedia.org>sumit
- https://www.amarujala.com>sonipat
- "हॉकी: इतिहास और विकास", भारतीय खेल प्राधिकरण, 2020।
- "विश्व हॉकी का इतिहास", इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ हॉकी, 2019।
- "ध्यान चंद: भारतीय हॉकी का गौरव", भारतीय खेल मंत्रालय, 2018।
- "आधुनिक हॉकी का उन्नति", हॉकी क्लब ऑफ लंदन, 2021।

© Shodh Patra